International Research Journal ISSN-0975-3486 RNI : RAJBIL 01488 VOL. I * ISSUE—3

शोध पत्र- हिन्दी

Dec.-09—Jan.-2010

उत्तराखण्ड के समाचार पत्र
[औपनिवेशिक काल के सन्दर्भ में]

* डॉ. सावित्री कैड़ा जन्तवाल

*उपाचार्य, इतिहास विभाग, डी.एस.बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

पत्रकारिता मानव सभ्यता के विकास का एक महत्वपूर्ण लक्षण है। भाषा और लिपि के विकास के बाद अपनी अभिव्यक्ति को एक ठोस आधार प्रदान करने के लिए जागरुक एवं प्रबुद्ध समाज ने पत्रकारिता को विकसित किया। विचारों को व्यक्त करने का यह सबसे सुन्दर और शक्तिशाली माध्यम है। रा0र0 खडिलकर लिखते हैं कि– ''दुनिया में कहीं भी किसी भी समय छोटी–छोटी घटना या परिवर्तन हो, उनका शब्दों में जो वर्णन होगा उसे 'समाचार पत्र' कहते हैं। समाचार सदैव नया, दिलचस्प, और मनोरंजक होता है। साथ ही इसमें निम्नलिखित तत्व जैसे– नूतनता, सत्यता, सभ्यता, सुरुचिपूर्णता, संशय और रहस्य समाहित होते हैं। उक्त तत्वों के अलावा संघर्ष, स्पर्धा, उत्तेजना, रोमांस, नाटकीयता, परिणाम, मानवीय गुणों का उद्रेक असाधारणता, आर्थिक परिवर्तन और उद्भावना समाचार के ऐसे तत्व हैं जिनसे समाचार पत्रों के प्रति आकर्षण उत्पन्न होता है।''

समाज में जाग्रति का विकास और उसे व्यापक सन्दर्भों में जोड़ने का काम पत्रों के माध्यम से सटीक रूप में होता है। इस प्रकार समाचार पत्र या अखबार जातीय हृदय का अन्तःकरण हैं, यह जातीय चिट्ठियाँ हैं। यदि हम इतिहास के पन्नों को पलटकर देखें तो पाते हैं कि मानव सभ्यता के इतिहास में एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार देने का काम नारदमुनि करते थे। वे स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक और पाताल लोक की सूचनाएँ कुशलतापूर्वक पहुँचाते थे। वह काल हमारे धर्मग्रन्थों में सतयुग कहलाता है। तब समाचार पहुँचाने का 'व्यक्ति' ही एक माध्यम था और इसी प्रकार यह काम त्रेतायुग में पवन पुत्र हनुमान ने किया। जिन्होंने अपने प्राणों की परवाह किये बिना दूसरे राज्यों में पहुँचकर, खतरों से खेलते हुए सीता माता तक भगवान राम का संदेश पहुँचाया और उनकी कुशलता की सूचना राम को दी। द्वापर युग में महाभारत की सम्पूर्ण घटना का आँखों देखा हाल संजय ने जो कि युद्धस्थल से कोसों मील दूर बैठे थे, जन्मौथ हस्तिनापुर नरेश धृतराष्ट्र को बराबर 18 दिनों तक सुनाया। द्वापर युगीन यह संजय पहला युद्ध संवाददाता था।

अतः भारत भूमि को ही मानव सभ्यता को पल्लवित श्रेय जाता है कि उसी का परिष्कृत स्वरूप है आज की संवाद सम्प्रेषण कला तथा उस कला का विस्तृत स्वरूप है ''आज की पत्रकारिता''। राजाओं के संदेश राजाज्ञायें प्रजा तक पहुँचाने के लिए शिलालेखों का प्रयोग किया जाता था। सम्राट अशोक ने अपने विचारों और धर्म का प्रचार करने के लिए शिलालेखों का माध्यम प्रयुक्त किया था। मध्यकालीन भारत में भी राजा तथा नवाब अपने राज्य के समाचार प्राप्त करने के लिए 'वाकियानवीस' नियुक्त करते थे। शेरशाह के शासन काल में बंगाल की अन्तिम सीमा तक के समाचार रोज उन्हें मिल जाया करते थे। यहाँ तक कि कबूतरों को भी संदेश का माध्यम बनाया था।

मनुष्य को अपने कर्त्तव्यों व अधिकारों के प्रति जागरुक करने में, जनता के विचारों, शिकायतों को शासक तक पहुँचाने में, शासक की नीतियों का मूल्यांकन करने में शासक के समर्थन और विरोध में प्रचार करने, हर प्रकार की क्रान्ति का सूत्रपात करने, यहाँ तक कि मानव जीवन की हर चेष्टा को प्रभावित, आन्दोलित और निर्देशित करने में समाचार पत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है। फ्रांस के 'नैपोलियन बोनापोर्ट' ने कहा था कि ''उसे हजारों संगीने (बंदूकें) उतना भयभीत नहीं करती हैं जितना कि एक ''समाचार पत्र''। इसी प्रकार से 'स्टालिन' कह उठे कि ''समाचार पत्र तोप के गोले से व प्रेस तोपखाने से अधिक खतरनाक है''। यही बात 'हिटलर' ने भी कही कि ''एक झूठ को सौ बार बोलो तो लोग उसे सच समझने लगते हैं। उस पर पूर्ण विश्वास करने लगते हैं''। इन समाचार पत्रों के विषय में अकबर इलाहाबादी का यह शेर सर्वथा उपयुक्त है–

''खींचो न कमानों को, न तलवार निकालो
गर तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो।''

अब प्रश्न यह उठ खड़ा होता है कि 'समाचार पत्र' कब से निकलने शुरू हुए? आज से लगभग 1325 वर्ष पूर्व चीन को पहला समाचार पत्र 'चिंग पाओ' को निकालने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह एक हस्तलिखित पत्र था। हालाँकि कुछ समय पश्चात् इसका निकलना बन्द हो गया। यह विश्व का प्रथम समाचार पत्र था। इसी प्रकार से स्वीडन का सबसे पुराना समाचार पत्र 'पोस्ट ओच इनरिक्स ट्रिडनिंगर' 1644 में छपना प्रारम्भ हुआ था। व्यावसायिक समाचार पत्रों में विश्व का सबसे पहला समाचार पत्र 1656 में हॉलैण्ड में 'बीकेकिक कूरंत बात यूरोपा' नाम से शुरू हुआ। वर्तमान में इसका नाम 'हार्लेक्स दोगब्लेडे हारलमेशे कूरंत' है। छापेखाने के आविष्कार के पश्चात् प्रारम्भिक मुद्रक एक कागज पर समाचार छापकर 'फेरी वालों' को मुफ्त दे देते थे ताकि वे उन्हें इधर–उधर बाँट दें और जन साधारण घटित उसको पढ़कर हुई घटनाओं, बातों और विवरणों आदि समाचारों से अवगत हो सकें। इस प्रकार की प्रणाली के प्रचलन के पीछे कारण स्पष्ट है कि उन दिनों समाचार एकत्रित करने का कोई माध्यम न था कि लोग अपने इर्द–गिर्द होने वाली बातों को जान सकें। धीरे–धीरे लोगों में जागरुकता बढ़ी और उनके सामने वह सुनहरा दिन

भी आया कि जब 'दैनिक समाचार पत्र' निकलना शुरु हो गया– 'मॉर्निंग पोस्ट' यह 1772 में लन्दन से निकलने वाला प्रथम दैनिक समाचार पत्र था। अब समाचार पत्र लोगों के मध्य लोकप्रिय होने लगा और लोग समाचार पढ़ने भी लगे। सोलोन, फ्रांस और ब्रिटेन में 'कॉफी हाउस' इसलिए लोकप्रिय था कि वहाँ पर विद्वान् लेखक तथा बुद्धिजीवी लोग एकत्र होते थे और बैठकर समाचारों का आदान–प्रदान करते थे। हमारे देश में लोग मेलों, उत्सवों, खेलों तथा बाजारों में मिलकर एक–दूसरे से कुशल समाचारों का मौखिक रूप में आदान–प्रदान करते हैं। अब हम लोगों के सामने यह प्रश्न उठ खड़ा होता है कि समाचार पत्रों के प्रति लोगों के मन में निरन्तर जागरुकता कैसे आई? और इसके पीछे क्या कारण थे?

जैसा कि सर्वविदित है कि भारत विश्व में अपनी सम्पन्नता के लिए प्रसिद्ध था और कहा जाता था कि ''भारत एक सोने की चिड़िया है और वहाँ दूध की नदियाँ बहती हैं''। अतः इस सोने की चिड़िया पर यूरोपियन्स की गिद्ध जैसी दृष्टि पड़ी और यहाँ की व्यावसायिक चीजें उन्हें इस देश की धरती पर खींच लाईं। जब वे यहाँ पहुँचे तब हम भारतीय उनके चरित्र, रहन–सहन, चाल–ढाल से इस कदर प्रभावित हुए कि बिना किसी परिवाद के अंग्रेजी राज स्वीकार कर लिया। जिस गलती का अहसास हमें लम्बे समय के पश्चात् हुआ। अंग्रेजों ने भारत आने से पहले ब्रिटेन के व्यापारियों के एक समूह ने 1600ई. में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की और वहाँ की महारानी एलिजाबेथ ने कम्पनी के चार्टर को मंजूरी देते हुए भारत के साथ व्यापार करने के लिए सारे अधिकार दे दिये। 1788 में कम्पनी का प्रथम जहाज भारत के सूरत बन्दरगाह पहुँचा जबकि 1615 में कैप्टन थामसरो सम्राट जेम्स प्रथम की ओर से बादशाह जहाँगीर के दरबार में प्रस्तुत हुआ और बादशाह से सूरत में एक कारखाने की स्थापना की मंजूरी ले ली।

डॉ0 शेखर पाठक लिखते हैं कि अंग्रेजों को उत्तराखण्ड में आने में किसी बड़े संकट का सामना नहीं करना पड़ा और न व्यापक संघर्ष। उस समय भारत का कोई भी स्वतन्त्र राज्य कम्पनी को चुनौती देने की स्थिति में न था। हिमालय का आकर्षण इतना अधिक था कि कम्पनी सरकार इसकी प्राप्ति के लिए लम्बा और खर्चीला संघर्ष करने को भी तैयार थी, किन्तु उन्हें ऐसा कुछ करना नही पड़ा तथा इन सबके ऊपर से तत्कालीन परिस्थितियाँ इनके अनुकूल थीं। वह थीं–''गोरखों के शासन से त्रस्त उत्तराखण्ड सुदर्शनशाह और हर्षदेव का प्रवास और कम्पनी के प्रति इनकी आशा भरी नजरें।'' प्रशासनिक व्यवस्था में पूर्णरूप से परिवर्तन कर दिया। डाक, सड़कें, शिक्षा, पुलिस आदि का कार्य नए सिरे से प्रारम्भ किया। इससे यहाँ के लोगों के खान–पान, रहन–सहन, आचार–विचारों में परिवर्तन आने लगा। नई रोशनी, नई हवा, नये विचार, नई शिक्षा, नया पहनावा, सब कुछ नया, लोग बहुत खुश थे। अपने को स्वतन्त्र महसूस कर रहे थे। सभी ने उनका स्वागत किया।

शक्ति प्रसाद सकलानी लिखते हैं कि स्कूलों में विद्यार्थी प्रार्थना पर–'ईश्वर चिरायु रखें महाराज जार्ज पंचम को'' स्तुति गाने लगे। रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने तो अपने एक गीत में ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम को ''भारत का भाग्य विधाता'' कह डाला। बाद में यही गीत–''जन–गण–मन'' स्वाधीन भारत का राष्ट्रगान हो गया।

अट्ठारहवीं शताब्दी में हमारे देश के जनक अंग्रेज पत्रकार जेम्स आगस्टस हिकी तथा विलियम ड्यूएन माने जाते हैं। हिकी भारत का पहला पत्रकार था, जिसने 'बंगाल गजट' को प्रकाशित करवाया। इसकी आरम्भिक प्रतियाँ नेशनल लाईब्रेरी कलकत्ता के विशेष सुरक्षा कक्ष में आज भी सुरक्षित हैं। ऐसा बताया जाता है कि एच0ई0 बस्टीड ने हिकी को भारतीय प्रेस का अगुवा माना है। 1818 में जोशुआ मार्शमैन के सम्पादन में पहला भारतीय भाषा में 'दिग्दर्शन' नामक पत्र निकला, लेकिन कुछ विद्वान् इस पत्र को पहला पत्र नहीं मानते हैं। उनका मानना है कि इसी वर्ष कलकत्ता से 'दर्पण' नामक पत्र का प्रकाशन हुआ शायद यह पत्र पहला हो। राजा राममोहन राय जिन्हें भारतीय पत्रकारिता का वास्तविक जन्मदाता माना जाता है उन्होंने 1821 में बांग्ला में 'संवाद कौमुदी' और फारसी में 'मिरातुल' अखबार प्रकाशित किए। 1822 में उर्दू का पहला अखबार 'जाये–जहानुमा' प्रकाशित हुआ। धीरे–धीरे हिन्दी समाचार पत्रों की संख्या बढ़ती ही चली गयी और 30 मई, 1826 को 'उदन्त मार्तण्ड' नामक पत्र भारतीयों द्वारा निकाला जाने वाला प्रथम पत्र था जो पण्डित जुगल किशोर के नेतृत्व में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। दूसरे कथन के अनुसार भारत में हिन्दी भाषा का प्रथम पत्र 'बूँदी' था। यह राजस्थान से प्रकाशित होता था। अब इन पत्रों ने धीरे–धीरे ब्रिटिश सरकार की आर्थिक अपव्यय, सरकार की भेदभाव की नीति, किसानों पर अत्यधिक भूमिकर का बोझ डालने की नीति, ग्रीष्म ऋतु में पर्वतों पर सरकारी अधिकारियों का प्रवास, भारतीयों को राज और संवैधानिक अधिकार न दिया जाना, भारतीयों को उच्च प्रशासनिक एवं सैनिक पदों पर नियुक्त न करने की नीति, सरकारी कर्मचारियों में व्याप्त भ्रष्टाचार, पुलिस के अत्याचार, किसानों के प्रति नीति, शिक्षा नीति, धार्मिक नीति आदि सभी के विश्लेषणात्मक आलोचनायें करनी प्रारम्भ कर दीं। अभी तक सारे समाचार पत्र हस्तलिखित थे। डॉ0 राम विलास शर्मा ने अपनी पुस्तक 'सन् सत्तावन की राज्य क्रान्ति' में लिखा है कि 'दिल्ली से सवा सौ के आस–पास हस्तलिखित पत्र निकलते थे'। मैकाले (भारत में अंग्रेजी शिक्षा के जनक) ने स्वयं कहा है कि 'अखबारों में अंग्रेज सरकार को गालियाँ और उनके चरित्र पर व्यंग्य कसा जाता था'। समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय संग्राम और सामाजिक पुनर्जागरण में अहम् भूमिका निभाई है।

इसी सन्दर्भ में जब हम उत्तराखण्ड के समाचार पत्रों के इतिहास की ओर देखें तो हमें अत्यन्त गर्व होता है कि यहाँ के समाचार पत्रों ने विदेशी शासन के बहि कार के लिए यहाँ की जनता के दिलों को मजबूत किया। यहाँ से सर्वप्रथम 1868 में 'समय–विनोद' नाम का समाचार पत्र जयदत्त जोशी के सम्पादन में जसपुर (नैनीताल) से निकला। यह उत्तराखण्ड से निकलने वाला पहला समाचार पत्र था।

परन्तु जिस समाचार पत्र ने समस्त उत्तराखण्ड में जन–जाग्रति उत्पन्न की। उसका नाम था– 'अल्मोड़ा अखबार'। यह समाचार पत्र 1871 में प्रथम बार बुद्धिबल्लभ पंत के सम्पादन में प्रकाश में आया। इसके बाद क्रमशः मुंशी इम्तियाज अली, जीवानन्द जोशी, सदानन्द सनवाल और विष्णु दत्त जोशी (1909 से 1913) के सम्पादन में 'अल्मोड़ा अखबार' रहा। 1918 में अचानक 'अल्मोड़ा अखबार' के बंद होने के कारण बद्रीदत्त पाण्डे के प्रखर लेख थे। जैसा कि कहा भी जाता है जन चेतना जाग्रत करने के लिए पत्रकार को जो पद्धति स्वीकारनी पड़ती है।

1901 में टिहरी रियासत के तत्कालीन राजा कीर्ति शाह पँवार ने प्रिन्टिंग प्रेस की स्थापना की। इस प्रेस से 'रियासत टिहरी गढ़वाल' नाम से एक पाक्षिक पत्र प्रकाशित होता था। इसमें जन समस्याएँ कम और रियासत के कायदे कानून ज्यादा छपते थे। यह टिहरी रियासत का

प्रथम समाचार पत्र था, जो कि बाद में बंद हो गया। दूसरे वर्ष 1902 में लैन्सडौन मासिक 'गढ़वाल समाचार' का प्रकाशन शुरु किया। यह समाचार 16 पृष्ठों का होता था और उसको मुद्रित मुरादाबाद से किया जाता था। कुछ समय के बाद नैथानी कोटद्वार आकर रहने लगे। इसलिए 'गढ़वाल समाचार' का छठा अंक वहीं से प्रकाशित हुआ। इस पत्र ने अन्याय और अत्याचार का जोरदार ढंग से विरोध किया। अतः पराधीनता के उस दौर में ऐसा साहस दिखाना कोई हँसी का खेल न था। नैथानी की मृत्यु पर गढ़वाल समाचार ने लिखा– ''पण्डित गिरिजा दत्त नैथानी ने देश–प्रेम की पवित्र ज्वाला को, जो अब तक हाकिमों और राजनीतिक अज्ञानता की राख से बुरी तरह दबी हुई थी, अपनी निर्भिक और तीव्र ध्वनि से प्रज्ज्वलित किया''।

1905 में गढ़वाली परि ाद् की ओर से 'गढ़वाली' पत्र गिरिजा दत्त नैथानी के सम्पादन में निकला था। अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने वाला यह एक महत्वपूर्ण पत्र था। इस पत्र पर कई बार मुकदमे भी चले। 1905 में गिरिजा दत्त नैथानी के सम्पादन में निकलने वाला तीसरा समाचार पत्र था 'पुरुषार्थ' इसका पहला अंक निकला था कि नैथानी की मृत्यु हो गई। 1918 में 'अल्मोड़ा अखबार' के होली अंक में तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर लोमस द्वारा तानाशाही, अय्याशी और मजदूरों पर छर्रे मारने की घटना जब पत्र में छपी तो यह पत्र 'अल्मोड़ा अखबार' प्रशासन का कोप भाजन बना। जहाँ एक ओर पत्र से 1000 रु0 जुर्माना माँगा, उसी क्रम में प्रकाशक सदानन्द सनवाल से इस्तीफा लिखा लिया। इस प्रकार 48 वर्ष की लम्बी यात्रा के पश्चात् इस पत्र का निकलना बन्द हो गया। अतः इस समय 'पुरुषार्थ' समाचार में गिरिजा दत्त नैथानी ने निम्न प्रतिक्रिया व्यक्त की–

''एक फायर में तीन शिकार,
कुली, मुर्गी और अल्मोड़ा अखबार।''

1913 में ब्रह्मानन्द थपलियाल तथा पंडित सदानन्द कुकरेती ने पौड़ी से 'विशालकीर्ति' नामक मासिक पत्रिका गढ़वाली भाषा में निकाली। इस बीच यहीं से महेशचन्द्र थपलियाल ने 'हृदय' नामक समाचार पत्र निकाला। पौड़ी से कुछ समय तक कोतवाल सिंह ने 'क्षत्रियवीर' नामक पत्र निकाला और 1923 में बैरिस्टर मुकुन्दीलाल ने 'तरुण कुमाऊँ' का प्रकाशन किया।

कुमाऊँ में 'अल्मोड़ा अखबार' के बंद होने पर पुनः प्रबुद्ध लोगों ने अखबार को निकालने की सोची और उसका प्रतिफल 18 अक्टूबर, 1918 को विजय–लक्ष्मी के दिन 'शक्ति' का प्रथम अंक बद्रीदत्त पाण्डे के सम्पादन में छपा। 'शक्ति' समाचार पत्र कुमाऊँ की राष्ट्रीय आन्दोलन की कट्टर सेविका, किसानों तथा मजदूरों की सहायिका, स्वराज्य की पुजारिनी तथा अन्याय की विरोधी थी। अतः इसके सम्पादक क्रमशः बद्रीदत्त पाण्डे, दुर्गादत्त पाण्डे, मनोहर पंत, कृष्ण चन्द्र जोशी, मथुरा दत्त त्रिवेदी, धर्मानन्द पाण्डे आदि थे। वास्तव में 'शक्ति' के सम्पादकीय लेखों में स्पष्ट रूप से राष्ट्रप्रेम दिखता है–

'राष्ट्र को उठाना है, बिखरी हुई जाति को जातियता के सूत्र में बाँधना, पुरानी हड्डियों में जान डालना, 33 करोड़ भारतीय सन्तानों के कानों में राष्ट्रीय गायत्री का यह पवित्र मंत्र फूँकना कि जातियों में जया जीवन, नया उत्साह और जोश पैदा हो जावे, बड़ा कठिन कार्य है।

1922 में अल्मोड़ा से बसन्त कुमार जोशी के सम्पादन में 'कुमाऊँ कुमुद' का प्रकाशन हुआ जोकि 1945 तक छपता रहा। यह पत्र राष्ट्रीय स्वतंत्रता से जुड़ा होने पर भी इसकी प्रवृत्ति भिन्न थी। 'शक्ति' और 'कुमाऊँ कुमुद' में प्रतिद्वन्द्विता थी। 'कुमाऊँ कुमुद' ने अपने लेखों से अंग्रेज प्रशासन के प्रति उदार नीति अपनायी थी, लेकिन सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के विषय में बराबर अपने लेख लिखे। इस 'कुमाऊँ कुमुद' को 'बाजार' समाचार पत्र के नाम से भी जाना जाता है। गढ़वाल से भी समाचार पत्र बराबर निकल रहे थे। 1924 में मसूरी (गढ़वाल) से अंग्रेजी भाषी अखबार 'द हेरल्ड वीकली' का निकलना प्रारम्भ हुआ। इसका प्रकाशन मसूरी से ही बनवारी लाल 'बेदम' ने किया था और श्याम चन्द्र नेगी 'हेरल्ड' के लिए बराबर लिखते थे, जिसमें टिहरी, जन क्रान्ति के समाचार बराबर छपते थे। यहाँ के साधु–सन्तों की भी राष्ट्र आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिसका स्पष्ट प्रमाण 1928 में देहरादून से स्वामी विचारानन्द सरस्वती द्वारा निकलने वाला समाचार पत्र है– 'अभय'। यह लम्बे समय तक जीवित रहा। कुमाऊँ से निकलने वाला तीसरा महत्वपूर्ण पत्र 'स्वाधीन प्रजा' का पहला अंक 1930 को अल्मोड़ा में, जो कि गुलामी के समय प्रकाशित हुआ। इस पत्र के प्रकाशन के पीछे कुमाऊँ के बादशाह नाम से चर्चित भारतीय ईसाई समुदाय के सबसे उत्कृष्ट पुरुष विक्टर मोहन जोशी की योजना थी।

इस प्रत्र की लोकप्रियता भी प्रशासन को परेशान करने लगी। साथ ही इस पत्र ने सरदार भगत सिंह को फाँसी दिये जाने के आदेश पर, सरकार का 'गुण्डापन' कहा। जिससे समाचार पत्र का निकलना सम्भव नहीं हो पा रहा था। कृ णानन्द शास्त्री के सम्पादन में पुनः अक्टूबर 1930 में फिर से समाचार पत्र निकलने लगा और 1932 के बाद इसका प्रकाशन बन्द हो गया। इस समाचार पत्र ने अपने छोटे से जीवनकाल में जहाँ एक ओर ईसाई समुदाय को राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ा, उसी क्रम में कुमाऊँ में जाग्रति का वातावरण पैदाकर देश को ऊर्जा प्रदान की। पूर्ण चन्द्र अग्निहोत्री ने 35 वर्ष बाद इस पत्र का पुनः सम्पादन और प्रकाशन किया।

कुमाऊँ में अल्मोड़ा नगर को पत्रकारिता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पत्र के प्रकाशन का श्रेय जाता है वह है 'समता' का प्रकाशन जो मुंशी हरि प्रसाद टम्टा के द्वारा 1934 में किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य उत्तराखण्ड में व्याप्त सामाजिक बुराईयों को दूर करना था और 'समता' का प्रकाशन 1935 में लक्ष्मी टम्टा के हाथों में आ गया। ये उत्तराखण्ड की प्रथम बी0ए0 पास महिला हैं एवं प्रथम दलित महिला पत्रकार भी थीं। वर्तमान में दयाशंकर टम्टा 'समता' का सम्पादन कार्य सम्भाले हुए हैं और यह अकेला उत्तराखण्ड का दलित समाज के विषय में लिखने वाला समाचार पत्र है। देवकी नन्दन ध्याणी के सम्पादन में 15 जनवरी, 1934 को पाक्षिक 'स्वर्ण भूमि' अखबार हल्द्वानी से प्रकाशित हुआ यह जनता को उत्साहित करने वाला समाचार पत्र था। अतः समाचार पत्र का बड़ा ही दुर्भाग्य रहा कि उसके सम्पादक की 1936 में मृत्यु के साथ ही इस समाचार पत्र का निकलना बंद हो गया। गुलामी के दौर में अल्मोड़ा से प्रकाशित होने वाला 'जाग्रत जनता' 1938 में पीताम्बर पाण्डे के सम्पादन में स्वयं समाचार छापते और फिर पैदल जाकर बाँटते थे। ऐसी थी पत्रकार पाण्डे की देश–भक्ति 'जाग्रत–जनता' के कुछ अंक अल्मोड़ा से छपे थे। पीताम्बर पाण्डे के 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में जेल जाने से प्रकाशन में परेशानियाँ होने लगीं। अतः जब वे जेल से रिहा हुए उसके बाद हल्द्वानी में रहे। अब वहीं से 'जाग्रत–जनता' का प्रकाशन किया।

समाचार पत्रों ने धीरे–धीरे समस्त उत्तराखण्डवासियों को अपनी ओर आकर्षित किया। इसके परिणामतः समाचार पत्रों की बाढ़ सी आ

गई। इन समाचार पत्रों का उद्देश्य लगभग एक जैसा ही था– अंग्रेजी शासन के प्रति लोगों को चेताना! यहाँ तक कि समाचारों ने तत्कालीन राजाओं को भी इस कदर प्रभावित किया कि वे भी समाचार पत्र निकालने लगे। जिसका स्पष्ट प्रमाण गढ़वाल के राजा महेन्द्र प्रताप द्वारा 'निर्बल सेवक' नामक मासिक समाचार पत्र निकाला जाना था। इसके लेख ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ आग उगलने वाले होते थे। गढ़वाल (लैन्सडोन) से ही 1938 में पीताम्बर दत्त पसबोला ने 'हितैषी' नामक एक पाक्षिक समाचार पत्र का सम्पादन किया, परन्तु यह ब्रिटिश सत्ता का समर्थक होने की वजह से अल्पजीवी रहा। उत्तराखण्ड का हर इलाका पत्रकारिता के माध्यम से देश को त्वरा (ऊर्जा) प्रदान कर रहा था। यह समाचार पत्रों के लिए एक ऐसा युग था कि जहाँ निरन्तर समाचार पत्र निकलते जा रहे थे। अतः समाचार पत्रों के इस युग को हम 'स्वर्णयुग' कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कोटद्वार भी समाचार पत्र निकालने में पीछे नहीं रहा। यहाँ के ज्योति प्रसाद माहेश्वरी ने 'उत्थान' साप्ताहिक का प्रकाशन किया। इस पत्र ने क्षेत्रीय आन्दोलनों को दिशा दी और लोगों को जाग्रत किया। जबकि 1936 में ही पौड़ी से महेशानन्द थपलियाल के द्वारा 'उत्तर भारत' अखबार निकाला गया जो कि थोड़े समय पश्चात् बंद हो गया। इनको पत्रकारिता की धुन सवार थी। उनकी धुन 'हृदय' साप्ताहिक और 'आशा' मासिक पत्र में देखने को मिलती है। ये पत्र कुछ समय पश्चात् बंद हो गये।

1940–41 में कृपाराम मिश्र ने 'सन्देश' साप्ताहिक का प्रकाशन किया। इस समय जितने भी समाचार निकले वे व्यावसायिक नहीं थे। अपितु आत्मसमर्पण की भावना से ओत–प्रोत एक मिशन था। उस युग के समर्पित पत्रकारों ने केवल समाचारों तक भी उनकी दृष्टि को सतत् नहीं रखा, वरन् भाषा, भाषा साहित्य और संस्कृति के विकास पर भी उनकी दृष्टि सतत् बनी रही। यह भी सत्य है कि उस काल में पत्रकारिता राजनीति प्रधान होते हुए भी राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति समर्पित थी।

समाचार पत्रों के विषय में शक्ति प्रसाद सकलानी लिखते हैं–

'1942 से 1945 तक 'शक्ति' का प्रकाशन बंद रहा। 1946 में उसका प्रकाशन पुनः प्रारम्भ हुआ। 'शक्ति' का महत्व इसलिए भी बहुत है कि उसमें गौर्दा, श्यामाचरण पंत, रामलाल वर्मा आदि जागरुक लोककवियों के अतिरिक्त सुमित्रानन्दन पंत, हेम चन्द्र जोशी, इलाचन्द्र जोशी आदि की रचनायें भी प्रकाशित हुई थीं। इसके अतिरिक्त कुली बेगार की कुप्रथा को समाप्त करने, उत्तराखण्ड की जनता को वन सम्बन्धी अधिकार दिलाने, उत्तराखण्डी एकता को सुदृढ़ आधार प्रदान करने और सल्ट, सालम, टिहरी और रवाँई आन्दोलनों को भी दिशा देने की 'शक्ति' की भूमिका अविस्मरणीय रही। 'शक्ति' अखबार उत्तराखण्ड का 'केसरी' था। स्वतंत्रता आन्दोलन में उसने क्रान्तिदूत की भूमिका निभाई थी। इस पत्र ने जहाँ एक ओर दूरस्थ कुमाऊँ की घटनायें दूसरी ओर राष्ट्रीय आन्दोलन को स्थानीय जनता के सामने रखने में सफलता पायी। 'शक्ति' से जुड़ा हर व्यक्ति संवेदनशील, समर्पित पत्रकार, सामाजिक, राजनैतिक कार्यकर्ता और आन्दोलनकारी था। 'शक्ति' ने हिन्दू–मुस्लिम एकता जैसे नाजुक विषयों पर लिखा है– ''हमारा धर्म तो आजादी है। मुसलमान मक्का, मदीना, टर्की, अरब के ख्वाब भले ही देखें। ईसाई जेरुसलम, पैलस्टीन आदि को याद करें। पर हमारा तो मक्का, मदीना, जेरुसलम, काशी, द्वारिका बस भारत में ही है। भारत हिन्दुओं का है जो मुसलमान ईसाई हुए हैं वे भी प्रायः हिन्दू हैं क्या हुआ? उन्होंने विचार बदले, पर उनकी रगों में भी भारत के लोगों का खून है। अतः सबको मिलकर भारत माता को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराना चाहिए। 'शक्ति' की सबसे बड़ी विशेषता यह भी है कि तब से लेकर आज तक लगातार प्रकाशित हो रहा है। जिस समय 'शक्ति' तेजी से अपना कार्य कर रहा था, उस समय देहरादून से स्वामी विचारानन्द सरस्वती ने 'अभयंकर' समाचार पत्र निकालकर दूसरी ओर राष्ट्रीय विचारों को पूर्णतः शक्ति प्रदान की। इसी प्रकार 1828 में टिहरी से ठाकुर हरदेव सिंह ने 'सत्यवीर' पत्र निकाला। पं० धर्मदत्त रतूड़ी उसके सहायक थे। ये समाचार पत्र स्वयं को राजभक्त ही कहते थे, लेकिन इनमें राजनैतिक विद्रोह की चिंगारी स्पष्ट रूप से अनुभव की जा सकती थी। आमतौर पर सरकार की खुशामंद करना, इनके लिए रूचिकर नहीं था और कई समाचार पत्रों को सरकार का कोपभाजन बनना पड़ा। फिर भी समाचार पत्रों ने राजनैतिक जाग्रति को अपने देश की उन्नति का मूल मंत्र मान लिया था।

अंत में जब हमें स्वतंत्रता मिली तो इससे पूर्व प्रकाशित समाचार पत्रों में से कुछ ही 15 अगस्त, 1947 को आजादी का जश्न देश सके। यह जश्न लाखों लोगों के खून बहाने से देखने को मिला। 1947 के अन्तिम 5 महीने बड़ी बेचैनी, भय, असुरक्षा और अफरा–तफरी में बीत रहा था। ऐसी परिस्थिति में समाचार पत्र निकालने की किसे सूझ रही थी? फिर भी ऐसे हालातों में 15 अगस्त, 1947 को भगवती प्रसाद पाँथरी और तेजराम भट्ट (टिहरी) ने देहरादून से 'युगवाणी' का प्रवेशांक निकाला जो वर्तमान में भी अपना अहम् बराबर बनाये हुए है।

आज हम बड़े गर्व के साथ कह सकते हैं कि स्वतंत्रता आन्दोलन में समाचार पत्रों ने एक वीर सिपाही की तरह भागीदारी करके भारत के इतिहास में अपना नाम दर्ज कराकर, अपने को सदा के लिए अस्मरणीय कर दिया है। लेकिन हमारे लिए यह भी एक विचारनीय विषय है कि स्वतंत्रता के उपरान्त अधिकांश समाचार पत्र धीरे–धीरे लुप्त होते चले गये। जिन पत्रों ने आजादी की जंग तथा सामाजिक विकास में भरपूर योगदान दिया था, जिनके स्वामी संपादक परिवर्तन के अग्रदूत रहे वे एकाएक हाशिये पर कैसे आ गये?

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 सकलानी, शक्ति प्रसाद : उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास : 2004 2. पाण्डे धर्मानन्द : अल्मोड़ा में पत्रकारिता की परम्परा : अल्मोड़ा स्मारिका : 1973 3. शक्तिा : 21 अक्टूबर 1919 4. भाकुनी, हीरा सिंह : संग्रामियों के सरताज पं० बदरीदत्त पाण्डे : 1989 5. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास : 1978 6. स्वाधीन प्रजा : 1 जनवरी 1930 7. कुमाऊँ कुमुद : 16 फरवरी 1930 8. आर्य, विनोद कुमार : ब्रिटिष कालीन एवं स्वातन्त्रयोत्तर कुमाऊँ में दलितोद्धार तथा स्थानीय पत्रकारिता : समता के विषेष सन्दर्भ में ऐतिहासिक अध्ययन : अप्रकाषित शोध प्रबन्ध 9. पाठक, शेखर : पहाड़– 9– 2003 10. इण्डियन नेषनल कांग्रेस प्रोसिडिंग : 1886–1890 11. डॉ0 भगत सिंह : हिन्दी साहित्य को कूर्मांचल की देन : 1967 12. प्रेमी, विषम्भर सहाय : हिमालय में भारतीय संस्कृति : 1965 13. पाण्डे, बद्रीदत्त : कुमाऊँ का इतिहास : 1937 14.
पाण्डे, त्रिलोचन : कुमाऊँ का लोक साहित्य : 1962 15. बहुगुणा, सुन्दरलाल : टिहरी गढ़वाल की जाग्रति की कहानी : कर्मभूमि : 20 जनवरी 1956 16. पाण्डे, बद्रीदत्त : कुमाउनियों को चेतावनी : शक्ति : 22 जनवरी 1927